

| | |
|---|----|
| 05 οἱς ἡμῶν ⁴³ δια τούτο λεγῶ ὑμ- | 21 |
| 06 ἵν ὅτι ἀρθῇσεται ἀφ ὑμῶν ἡ | 21 |
| 07 βασιλεία τοῦ [—] θῦ καὶ] δοθησέτ[α]ι | 25 |
| 08 ἐθνεί ποιουν]ΤΙ τ[ο]υ Σ ΚΑρ[που]ς | 24 |
| 09 αὐτῆς ⁵ ^{21,45} καὶ ἀκου]Σα[ν]ΤΕΣ Ο[ι | 20 |
| 10 - 29/30 . . . | |

Ende der Seite nicht erhalten (es fehlen Zeilen 10-29/30)

Text:

→

Beginn der Seite korrekt

| | |
|---|--|
| 01 -στελεν τοὺς δούλους αὐτοῦ πρὸς | |
| 02 τοὺς γεωργοὺς λαβεῖν τοὺς καρ- | |
| 03 ποὺς αὐτοῦ. ^{21,35} καὶ λαβόντες οἱ γεωρ- | |
| 04 γοὶ τοὺς δούλους αὐτοῦ ὃν μὲν | |
| 05 ἔδειραν, ὃν δὲ ἀπέκτειναν, ὃν | |
| 06 δὲ ἐλιθοβόλησαν. ³⁶ πάλιν ἀπέ- | |
| 07 στειλεν ἄλλους δούλους πλείο- | |
| 08 νας τῶν πρώτων, καὶ ἐποίησαν | |
| 09 αὐτοῖς ὡσαύτως. ³⁷ ὕστερον δὲ ἀπέ- | |
| 10 στειλεν πρὸς αὐτοὺς τὸν υἱὸν αὐ- | |
| 11 τοῦ λέγων, Ἐντραπήσονται τὸν | |
| 12 υἱόν μου. ³⁸ οἱ δὲ γεωργοὶ ἰδόντες | |
| 13 τὸν υἱὸν εἶπον ἐν ἑαυτοῖς, Οὗ- | |
| 14 τὸς ἐστὶν ὁ κληρονόμος· δεῦτε | |
| 15 ἀποκτείνωμεν αὐτὸν καὶ σχῶ- | |

⁵ Matth 21,44 fehlt in dieser Handschrift.